विचार बिन्दु

मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं। –रामदास

आयुर्वेदोक्त भोजन से जरा-व्याधि-मुक्त भारत की परिकल्पना साकार हो सकती है

आयुर्वेद में आहार का विज्ञान बहुत विशाल है जो, रसायन और औषधियों के साथ मिलकर, हमें स्वस्थ रखने और रोगों को दूर करने में मदद करता है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध से अब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि शरीर में फ्री-रेडिकल्स के बढ़ने से होने वाला ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द, यह दो बाते हैं जो अंततः मानव शरीर के नाश का कारण बनती हैं। अतः यदि इन दोनों को नियंत्रित कर लें तो जरा व्याधि से मुक्ति मिल सकती है। शोध से यह भी सिद्ध हो चुका है कि आयुर्वेद-सम्मत भोजन और रसायन यही दोनों काम-एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटीइन्फ्लेमेटोरी कार्य-बेहद मज़बूत तरीके से करते हैं।

वर्ष 2016 का चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार जापानी जीवविज्ञानी योशीनोरी ओहसुमी को जिस शोध के लिये मिला है उससे एक संभावना और उभरी है कि आयुर्वेदोक्त भोजन और रसायन, ऑटोफैगी नामक प्रक्रिया को बढ़ावा देने का कार्य भी करते हैं। ऑटोफैगी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हमारे शरीर की कोशिकायें स्वयं को खाकर द्रव्यों का पुनर्चक्रण कर लेती हैं। इस प्रक्रिया के बाधित होने पर पार्किनसन और मधुमेह जैसी बीमारियां हो सकती हैं। ऑटोफैगी एक मौलिक प्रक्रिया है जिसका हमारे स्वास्थ्य एवं बीमारियों के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण स्थान है।

महर्षि चरक के अनुसार आयुर्वेद के दो मूल उद्देश्य हैं (च.सं., सू.स्था., 30.26): स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् आतुरस्य विकारप्रशमनम्। अर्थात, स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और पीड़ित व्यक्ति के विकार का शमन। आचार्य सुश्रुत द्वारा दी गयी स्वास्थ्य की परिभाषा के अनुरूप उपयुक्त आहार हमारे शरीर के दोष, अग्नि, धातु, व मलक्रिया को सम करता है एवं प्रसन्नता प्रदान करता है: समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रियः। प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थइत्यभिधीयते।। (सु.सं.,सू.स्था.,15.41)। जिस व्यक्ति के दोष, अग्नि, धातु, और मल-त्याग सन्तुलित हों, इन्द्रिय, आत्मा एवं मन प्रसन्न हो, वही स्वस्थ कहलाता है। आहार से संतुष्टि, तत्क्षण शक्ति, और संबल मिलता है, तथा आयु, तेज, उत्साह, याददाश्त, ओज, एवं पाचन में वृद्धि होती है: आहारः प्रीणनः सद्योबलकृद्देहधारकः। आयुस्तेजःसमुत्साहस्मृत्योजोऽग्निविवर्द्धनः।। (सु.सं., चि.स्था. 24.68)।

यहाँ भोजन से प्राप्त होने वाला ओज जीने के लिये बहुत महत्वपूर्ण है, जैसा कि आचार्य चरक ने लिखा है (च.सं., सू.स्था., 17.73-74): बिभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं ध्यायति व्यथितेन्द्रियः। दुश्छायो दुर्मना रूक्षः क्षामश्चैवौजसः क्षये।। हृदि तिष्ठित यच्छुद्धं रक्तमीषत्सपीतकम्। ओजः शरीरे संख्यातं तन्नाशान्ना विनश्यति।। सार यह है कि ओजस के क्षय हो जाने से भय, दुर्बलता, चिंता, अकर्मण्यता, पीड़ा, निरुत्साह, निस्तेज इन्द्रियाँ, शरीर की चमक में फीकापन, मन में दुःख, चेहरे में शुष्कता, और दमदार आवाज में कमी आ जाती है। ओजस हृदय में पाया जाता है और ओजस का नाश होने से शरीर विनष्ट हो जाता है। तथाकथित-व्यंजनों के नाम पर बाज़ार में उपलब्ध कचरा-भोजन या जंक-फूड के भरोसे ओजस का सत्यानाश हो रहा है। साफ़ बात यह है कि यदि हम आयुर्वेद में दी गयी सलाह के अनुसार अपना भोजन लें तो ओजस को नष्ट होने और अंततः शरीर को नष्ट होने से बचा सकते हैं। इस दिशा में सात बातें महत्वपूर्ण हैं।

सबसे पहली बात यह है कि भोजन करने के पूर्व शरीर के समस्त आवेग शान्त हों। मन प्रसन्न व निर्मल हो। अपने स्वाभाविक भोजन-समय से बहुत पहले या बाद में भोजन करना अनुचित रहता है। रात में भोजन नहीं करना चाहिये। आधुनिक विज्ञान में हुये शोध, अनुभवजन्य ज्ञान एवं शास्त्रोक्त विचारों को एकीकृत करते हुये वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह मान लेना उचित होगा कि ग्रीष्मकाल में रात्रि 8.00 बजे, शरद ऋतु में 7.00 बजे एवं वर्षा ऋतु में सूर्यास्त के पूर्व ही भोजन करना हितकारी होगा। यथासंभव जमीन पर सुखासन या पालथी लगा कर, अपनों के साथ, प्रसन्न मन से संतुलित, पोषक और स्वादिष्ट भोजन करने का अपना आनंद है।

दूसरी बात यह है कि भोजन हितकारी, पोषक और संतुलित हो तथा अपनी पाचन शक्ति को देखते हुये ही ग्रहण किया जाये। भोजन में छः रसों-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, व कसाय-का होना आवश्यक है। आहार की मात्रा व प्रकार, और इन दोनों के संदर्भ में शरीर की क्षमता, ये तीनों बहुत महत्वपूर्ण संकेतक हैं। उदाहरण के लिये, शालि व साठी चावल, मूंग आदि भले ही शीघ्र पचने वाले होते हैं परंतु इन्हें भी ठूँस-ठूँस कर खा लिया जाये तो पाचन में कठिनाई होती है। इसके विपरीत रोटी, पूड़ी, हलवा, गुड़, चीनी, दूध से बनी रबड़ी, खोवा, तिल, उड़द आदि स्वभाव से गरिष्ठ होते हैं, किन्तु समुचित या अल्प मात्रा में ग्रहण करने पर यह भी पच जाते हैं। लघु या हलके तथा सुपाच्य खाद्य पदार्थ वायु व अग्नि गुण प्रधान होने के कारण पाचकाग्नि को प्रदीप्त करने वाले स्वभाव के होते हैं और इन्हें तृप्तिपूर्वक खा लेने पर भी बहुत अधिक दोष उत्पन्न नहीं होते। किंतु गुरू या गरिष्ठ द्रव्य पृथ्वी तथा सोम गुण की अधिकता होने के कारण अग्नि को उदीप्त नहीं कर पाते, अतः जब तक कठोर व्यायाम से अग्नि-बल बढ़ा न लिया गया हो, तब तक इन्हें तृप्तिपूर्वक खाते ही दोष खड़े होने लगते हैं। अतः गरिष्ठ भोजन खाने से पूर्व अपने अग्नि-बल की हैसियत का खयाल रख लेना चाहिये। आचार्य चरक ने कहा है कि गरिष्ठ भोजन को पेट के आधे भाग की तृप्ति तक ही लेना चाहिये। लघु पदार्थों को भी उचित मात्रा में ही खाना चाहिये, क्योंकि समुचित मात्रा में किया गया भोजन ही हमें बल, वर्ण, सुख तथा आयु प्रदान करता है। पीठी की तरह गूंथे गये आटे व उड़द आदि की पीठी से बना हुआ भोजन भी गरिष्ठ होता है। अतः भोजन करने के पश्चात् पीठी से निर्मित व्यंजन, चावल या चेवड़ा आदि को अत्यल्प मात्रा में ही खाना चाहिये। असल में बहुत तेज भूखे होने पर ही इस प्रकार के खाद्य पदार्थों का लेना उचित रहता है। सुखाई हुई सब्जियाँ, कमल की जड़, कमल की नाल आदि भी गुरू द्रव्य हैं, अतः इनका सेवन भी निरंतर नहीं करना चाहिये। दही या छाछ के साथ दूध को पका कर या फटे हुये दूध से बनाये गये बनाये गये व्यंजन एवं छैना, दही, उड़द, ज़ई आदि को भी लगातार प्रतिदिन नहीं खाना चाहिये।

> **शालिधान्य, गेहूं, जौ, साठी चावल, वनों में मिलने वाले खाद्य, हरड़, आमला, दाख-मुनक्का, परवल, मूंग, खांड, घी, वर्षा का स्वच्छ जल, दूध, मधु, अनार, सैन्धव लवण, और आँखों की ताक़त बढ़ाने के लिये रात में मधु और घी के साथ त्रिफला का सेवन किया जाना चाहिये। इसके साथ ही स्वास्थ्य की रक्षा के लिये या रोगों से मुक्ति के लिये जो भी उपयोगी आहार हो उसे लिया जा सकता है।**

तीसरी बात यह है कि आयुर्वेद में भोजन व्यक्ति-व्यक्ति की स्थिति, प्रकृति, एवं ऋतुओं के आधार पर तय होता है। उदाहरण के लिये, सूखे मेवे, आलू, टमाटर, सेब, मटर, चना आदि वात को कुपित करते हैं, इसलिये वात प्रकृति के लोगों को इन पदार्थों को कभी-कभार ही लेना चाहये। जबकि मीठे फल, जैसे अंगूर, केला, संतरा, नारियल, व लाल चावल वात प्रकृति के लोगों के लिये लाभकारी हैं। इसी प्रकार अधिक मसालेदार भोजन, मूंगफली का तेल, खट्टे फल, केला, पपीता, टमाटर, लहसुन आदि पित्त दोष को कुपित करते हैं। जबकि, आम, संतरा, नाशपाती, हरी सलाद आदि पित्त दोष को शान्त करते हैं। इसी प्रकार केला, नारियल, खजूर, पपीता, अनन्नास व विभिन्न दुग्ध-उत्पाद कफ को कुपित करते हैं, जबकि सूखे मेवे, अनार, सफ़ेद चावल, अंकुरित अनाज आदि कफ प्रकृति के लोगों के लिये उपयोगी रहते हैं।

चौथी बात, शालिधान्य, गेहूं, जौ, साठी चावल, वनों में मिलने वाले खाद्य, हरड़, आमला, दाख-मुनक्का, परवल, मूंग, खांड, घी, वर्षा का स्वच्छ जल, दूध, मधु, अनार, सैन्धव लवण, और आँखों की ताक़त बढ़ाने के लिये रात में मधु और घी के साथ त्रिफला का सेवन किया जाना चाहिये। इसके साथ ही स्वास्थ्य की रक्षा के लिये या रोगों से मुक्ति के लिये जो भी उपयोगी आहार हो उसे लिया जा सकता है। अनुभव के अनुसार जिन पदार्थों के सेवन से स्वास्थ्य ना बिगड़े या कोई नया रोग उत्पन्न नहीं हो, उन्हें खाया जा सकता है। नियमित भोजन में ऐसे द्रव्यों को भी थोड़ी मात्रा में शामिल किया जा सकता है जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत हैं। विविध प्रकार व विविध रंगों के स्थानीय मौसमी फल, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आँवला, लहसुन, सोंठ, कालीमिर्च, पिपली, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, शहद, गुड़, एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनका थोड़ा सेवन उपयोगी रहता है। वर्षा से संग्रहित किया हुआ साफ जल ही सबसे उत्तम माना जाता है। भोजन के अंत में पानी पीना हानिकारक है। जरूरी हो तो अत्यल्प मात्रा में ही लेना चाहिये।

पांचवीं बात यह है कि कुछ खाद्य पदार्थ पकाने के बाद देर तक रख देने पर, बासी हो जाने पर या स्वरुप बदल जाने के बाद नहीं खाए जाने चाहिये। सूची तो बड़ी लम्बी है, पर सारांश में देखें तो ठंडा होने पर पुनः गर्म किया हुआ भोजन, सूख जाने के बाद पानी मिलाकर पुनः गीला किया हुआ भोजन, व कांसे के पात्र में कई दिनों तक रखा हुआ घी नहीं खाना चाहिये। अधपका, दुर्गन्धयुक्त, जला हुआ, स्वाभाविक रंग से भिन्न या रंग बदला हुये, पानी छोड़ चुके, बहुत नमक-युक्त, या बार-बार गरम किया हुआ बासी भोजन खाना हानिकारक है। गरम की हुई शहद, या शहद लेने के बाद गरम पानी पीना, रात्रि में दही या अधिक मिठाई, भोजन के अंत में मीठा और शुरुआत में तिक्त और कटु पदार्थ, गर्म पेय के तुरंत बाद ठंडा जल वर्जित हैं।

छठी बात यह है कि कुछ खाद्य पदार्थ ऐसे भी हैं जो प्रायः एक-दूसरे के साथ नहीं चलते। दही व छाछ के साथ केला; नमक के साथ दूध; गुड, पिप्पली, शहद व कालीमिर्च के साथ पूड़ी; उड़द की दाल के साथ मूली; दही व दूध के साथ मूली; बासी या सूखी मूली; खट्टे फलों के साथ दूध; खीर, खोया, मलाई, व दूध के साथ खिचड़ी और अल्कोहल; खीर के साथ छाछ; दही के साथ खजूर; कमल-ककड़ी के साथ अंकुरित अनाज; शहद के साथ खजूर और दारू; और बराबर मात्रा में घी को शहद के साथ, या शहद, घी, वसा, तेल और जल को एक साथ मिलाकर नहीं खाना चाहिये। शोध में पाया गया है कि ग्रीन चाय के साथ दूध, चाय के साथ लहसुन, अनार-रस के साथ अंगूर-रस, हरे टमाटर और आलू के साथ अल्कोहल नहीं लेना चाहिये।

और अंत में, आयुर्वेद के इतिहास में 5000 वर्षों के दौरान लिखे गये अनेकानेक ग्रंथों को खंगाल डालने पर कहीं भी पिज़्ज़ादिवर्ग, बर्गरादिवर्ग, कुर्कुरादिवर्ग, फिंगरचिप्सादिवर्ग या मैग्यादिवर्ग जैसे आहार द्रव्यों का वर्णन नहीं प्राप्त होता। अतः आयुर्वेद के जन्मदाता समाज के मध्य इनका उपयोग वर्ष में एकाध-दो बार स्वाद बदलने के लिये ही किया जाना हितकारी हो सकता है!

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे रहा महाकुंभ

विनोद पाठक

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज शहर में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर इन दिनों दुनिया का सबसे बड़ा अस्थाई शहर बस चुका है। इसी अस्थाई शहर में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक दुनिया का सबसे बड़ा मेला महाकुंभ आयोजित हो रहा है। 4200 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले महाकुंभ मेला क्षेत्र में न केवल भारत, बल्कि दुनिया भर से श्रद्धालु और पर्यटक पहुंचना शुरू हो चुके हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का दावा है कि 40-45 करोड़ से अधिक श्रद्धालु और पर्यटक इस बार महाकुंभ मेले में आएंगे। यही कारण है कि छोटी से लेकर बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियों की नजरें महाकुंभ मेले पर हैं। महाकुंभ मेले की तैयारियों पर केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार ने भी भारी राशि का निवेश किया है। अनुमान है कि महाकुंभ मेले से न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिलने वाली है।

भारत को धार्मिक स्थलों और मेलों का देश कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक सैकड़ों छोटे-बड़े मेले लगते हैं। 5000 से अधिक धार्मिक स्थल हैं। भारत ही नहीं, दुनिया भर में धार्मिक स्थल और मेले अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने के केंद्र बिंदु हैं। भारत के करीब-करीब सभी राज्यों में अनेक बड़े धार्मिक स्थल हैं, जो राज्य की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अभी अयोध्या और काशी में ही देखा गया, यहां से किस तरह से उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एकाएक बूस्टर डोज मिला है। अयोध्या में पिछले वर्ष जनवरी से सितंबर तक 13.56 करोड़ लोग दर्शन करने पहुंचे थे, जबकि इसी अवधि में आगरा में 12.51 करोड़ लोग ताजमहल को देखने के लिए पहुंचे थे। इस बार नववर्ष के पहले ही दिन 8 लाख लोग काशी विश्वनाथ कॉरिडोर में दर्शनों को पहुंच गए। गुजरात, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु जैसे राज्यों में मंदिरों से होने वाली आय राज्य सरकार को बड़ा संबल प्रदान कर रही है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश समेत अन्य राज्यों में बड़े मेले लगते हैं।

प्रयागराज में महाकुंभ मेले के लिए केंद्र और राज्य सरकार ने करीब 15,000 करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया है। 566 प्रोजेक्ट्स महाकुंभ के लिए चलाए गए हैं। मेले क्षेत्र को बसाने में 21 विभागों की भागीदारी रही है। इस बार मेले का आकार भी बढ़ाया गया है। वर्ष 2019 के अर्द्धकुंभ में 3200 हेक्टेयर में मेला क्षेत्र था, जो इस बार 4200 हेक्टेयर हो गया है। सेक्टरों की संख्या 20 से बढ़कर 25 हो गई है। घाटों की लंबाई 8 किलोमीटर से बढ़कर 12 किलोमीटर हुई है। श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए 1850 हेक्टेयर में पार्किंग बनाई गई है। पांटून पुल की संख्या 22 बढ़ाकर 30 की गई है। 1.5 लाख अस्थाई और 500 स्थाई शौचालय बनाए गए हैं। मेला क्षेत्र में पौने दो लाख से अधिक टेंट लगे हैं और 25,000 लोगों के रहने की व्यवस्था की गई है। 67,000 एलईडी लाइट्स मेला क्षेत्र को दूधिया रोशनी प्रदान कर रही हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने 7260.45 करोड़ रुपए का बजट जारी किया है, जिससे 441 प्रोजेक्ट और 125 डिपार्टमेंटल प्रोजेक्ट्स पूर्ण हुए हैं। इनमें 75 प्रतिशत पर स्थाई स्ट्रक्चर हैं। सबसे अधिक 42 प्रतिशत बजट पुल और रोड डेवलपमेंट पर खर्च हुआ है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दावा किया कि महाकुंभ मेले से राज्य में 2 लाख करोड़ रुपए की आर्थिक वृद्धि दर्ज होगी। वर्ष 2019 के कुंभ ने राज्य की अर्थव्यवस्था में 1.2 लाख करोड़ रुपए का योगदान दिया था। उत्तर प्रदेश सरकार को महाकुंभ मेले से 25,000 करोड़ रुपए का सीधे राजस्व की प्राप्ति होगी, जो किराए, सेवा शुल्क और टैक्स के रूप में मिलेगा। छोटे दुकानदार से लेकर होटल इंडस्ट्री, ट्रांसपोर्टेशन, फूड इंडस्ट्री, रिटेल टूर एंड ट्रैवल, गारमेंट जैसे अनेक सेगमेंट्स को फायदा मिल रहा है। महाकुंभ मेले क्षेत्र में बसी टेंट सिटी में 2000 से लेकर 80,000 रुपए तक के लक्जरी टेंट उपलब्ध हैं। केवल महाकुंभ मेले की तैयारियों से 45,000 से अधिक परिवारों को सीधा रोजगार मिला है। देश भर में महाकुंभ मेले से लोगों को रोजगार और आर्थिक लाभ हो रहा है। इतिहास पर नजर डालें तो वर्ष 1882 में ब्रिटिश सरकार के समय प्रयागराज में कुंभ मेले के आयोजन पर सरकारी कोष से 20,228 रुपए खर्च हुए थे, जबकि 49,840 रुपए की आमदनी के साथ 29,612 रुपए का लाभ सरकार को हुआ था।

केंद्र सरकार के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में देश में धार्मिक पर्यटन के लिए 67.7 करोड़ लोग निकले थे, यह संख्या वर्ष 2022 में 143.9 करोड़ तक पहुंच गई। वर्ष 2022 में धार्मिक पर्यटन से राजस्व 7.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 16.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। वर्ष 2023 में भारत में धार्मिक पर्यटन मार्केट 1172.1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का था, जो वर्ष 2024 से 2032 के बीच 17.75 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़कर 5102.3 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच सकता है। धार्मिक स्थलों पर श्रद्धालुओं और पर्यटकों को लुभाने के लिए छोटे-बड़े ब्रांड जुटे हैं। रिटेल स्टेट सलाहकार सीबीआरआई ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया कि तिरुपति, पुरी, अमृतसर, अजमेर जैसे मझले आकार के शहरों में रिटेल ब्रांड अपने प्रॉडक्ट्स को उतार चुके हैं। अमृतसर, अजमेर, कटरा, सोमनाथ, वाराणसी, शिरडी, पुरी, अयोध्या, मथुरा, तिरुपति, द्वारका, बोधगया, गुरुवयूर और मदुरै में आध्यात्मिक पर्यटन में वृद्धि का लाभ रिटेल ब्रांड उठा रहे हैं। दुनिया की सभी बड़ी फूड इंडस्ट्रीज भारत में धार्मिक पर्यटन स्थलों की ओर रुख कर चुकी हैं।

वर्ष 2014 में देश की सत्ता संभालने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धार्मिक स्थलों के विकास पर खास जोर दिया है। धार्मिक स्थलों के पुनरुद्धार और कनेक्टिविटी पर सरकार बहुत तेजी से काम कर रही है। स्वदेश दर्शन और प्रसाद जैसी कई योजनाओं के माध्यम से 120 परियोजनाएं चलाई गई हैं, जिन पर 6800 करोड़ रुपए से अधिक खर्च हुए हैं। देश में 1.5 लाख किलोमीटर का रोड नेटवर्क बिछाया जा चुका है। 500 से अधिक नए हवाई मार्ग और 150 से अधिक नए एयरपोर्ट्स से एयर कनेक्टिविटी में बढ़ोतरी हुई है। 100 से अधिक पर्यटक इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं पिछले 10 साल में पूरी की गई हैं।

महाकुंभ का प्रचार भारत समेत दुनियाभर में केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार कर रही है, ताकि अधिक से अधिक लोगों को तीर्थराज प्रयाग में लगाया जा सके। पहली बार महाकुंभ में उच्च तकनीक का प्रयोग हो रहा है। डिजिटल एक्सपीरियंस सेंटर से लेकर कुंभ सहायक चैटबॉट, जो 11 भारतीय भाषाओं में संवाद में सक्षम है, को लॉन्च किया गया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस लैस फेस रीडिंग कैमरे लगाए गए हैं। एंटी ड्रोन सिस्टम एक्टिवेट किया गया है। टॉयलेट सफाई से लेकर पुलिस व्यवस्था के लिए एप्स बनाए गए हैं। पहली बार दुनिया में किसी अस्थाई शहर में गूगल नेविगेशन की सुविधा दे रहा है।

पिछले दिनों जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रयागराज आए थे और गंगा पूजन किया था, तब उन्होंने महाकुंभ को महापर्व कहा था। अगले 45 दिनों में इसी महापर्व में विश्व का सबसे बड़ा मानवों का एकत्रीकरण होने वाला है। 6 बड़े स्नान पर्वों पर करोड़ों लोग पावन गंगा, यमुना व सरस्वती की त्रिवेणी में डुबकी लगाएंगे और यह डुबकी देश की अर्थव्यवस्था को एक नया मार्ग दिखाने वाली होगी। आध्यात्मिक-सांस्कृतिक रूप से देश को और आगे बढ़ाने वाली होगी। महाकुंभ केवल स्नान और पुण्य कमाने का पर्व नहीं, बल्कि देश की इकोनॉमी को नई दिशा और नई गति देने वाला भी होगा।

–विनोद पाठक,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)।

यूजर चार्ज का विरोध, अजमेर में व्यापारियों ने बाजार बंद किये

नगर निगम की कार्रवाई पर व्यापारियों ने प्रदर्शन कर विरोध जताया

अजमेर, (निसं)। नगर निगम द्वारा व्यापारियों को यूजर्स चार्जेस, फायर एनओसी और यूडीएच कर की वसूली के लिए डराने-धमकाने और दुकानों को सीज करने की धमकी दिए जाने के विरोध में शनिवार को अजमेर के करीब 35 बाजारों में स्वेच्छा से बंद रखकर विरोध प्रदर्शन किया गया।

श्री टॉकीज अहाता मोहल्ला क्षेत्र में बाबा गेस्ट हाउस के बाहर श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ के अध्यक्ष महेंद्र बंसल और महासचिव रमेश लालवानी के नेतृत्व में व्यापारियों ने विरोध रैली निकाली। इस रैली में न्यू मैजेस्टिक बाजार, गिदवानी बाजार, डिग्गी बाजार, सोदागर मोहल्ला धसेटी बाजार, सदर बाजार सहित कई बाजारों के प्रतिनिधि शामिल हुए। व्यापारियों ने नारे लगाते हुए नगर निगम की कार्रवाई को तानाशाही करार दिया। व्यापारियों का आरोप है कि नगर निगम के कर्मचारी समूह बनाकर बाजारों में दुकानों को सीज करने की धमकी दे रहे हैं और यूजर्स चार्जेस और फायर एनओसी के नाम पर डराने-धमकाने का काम कर रहे हैं। महासंघ के पदाधिकारियों ने बताया कि कई दुकानदार पहले ही फायर सिलेंडर लगवा चुके हैं, इसके बावजूद फायर एनओसी के नाम पर उन्हें परेशान किया जा रहा है।

> ■ **आरोप है कि निगम कर्मी समूह बनाकर बाजारों में दुकानों को सीज करने की धमकी दे रहे हैं**

महासंघ के अध्यक्ष महेंद्र बंसल ने कहा कि निगम की यह तानाशाही नीति व्यापारियों के लिए असहनीय है। यदि निगम ने अपनी हठधर्मिता नहीं छोड़ी, तो आंदोलन और उग्र होगा। जरूरत पड़ी तो अजमेर में अनिश्चितकालीन बंद भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि महासंघ लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांगों को सामने रख रहा है, लेकिन निगम का रवैया सरकार की बदनामी करने वाला है।

रैली और सभा का आयोजन :-अहाता मोहल्ला से शुरू हुई रैली डिग्गी बाजार, सोदागर मोहल्ला, उतार घसेटी होते हुए सदर बाजार तक पहुंची। रैली के दौरान व्यापारियों ने नगर निगम के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। सभा को संबोधित करते हुए महासचिव रमेश लालवानी ने कहा कि निगम की नीतियां व्यापारियों को बेवजह परेशान करने वाली हैं। व्यापारियों ने सामूहिक रूप से मांग की कि यूजर्स चार्जेस और फायर एनओसी के नाम पर हो रही वसूली को रोका जाए।

व्यापारिक संघों का समर्थन :-विरोध प्रदर्शन में खजाना गली, नला बाजार, डिग्गी बाजार, बालाजी व्यापार मंडल, अहाता मौहल्ला खारी कुई, रावण की बगीची, जटियावास, और घी मंडी सहित कई बाजारों के व्यापारिक संगठनों ने हिस्सा लिया। प्रदर्शन में प्रमुख रूप से विजय गोयल, हीरालाल जिंगर, अशोक छतवानी, नरेंद्र सोनी, गौरीशंकर पंवार, विजय ग्वालानी, अशोक बालानी और नवीन पारवानी सहित अन्य व्यापारियों ने भाग लिया।

नए राजस्व ग्राम घोषित करने के आदेश की क्रियान्विति पर हाईकोर्ट की रोक

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार के नए राजस्व ग्राम घोषित करने के लिए जारी परिपत्र में तय निर्धारित मापदंडों के विपरीत जाकर तीन नए राजस्व ग्राम घोषित करने के आदेश की क्रियान्विति पर रोक लगाई है। नियमानुसार नए राजस्व ग्राम का नाम किसी व्यक्ति विशेष, धर्म, जाति, और उपजाति के नाम पर किये जाने पर स्पष्ट मनाही है। बावजूद इसके नियम कायदों को दरकिनार कर नए प्रस्तावित गांवों के नाम स्थानीय वार्ड पंच और पार्टी कार्यकर्ता के पूर्वजों के नाम पर कर प्रस्तावित कर दिए गए। याची की तरफ से अधिवक्ता यशपाल ख़िलेरी ने पैरवी की। राजस्थान हाइकोर्ट के वरिष्ठ न्यायाधीश विनीत कुमार माथुर की एकलपीठ में मामले की सुनवाई हुई। राज्य सरकार सहित ज़िला कलेक्टर जोधपुर से जवाब तलब किया है। अगली सुनवाई 14 फ़रवरी 2025 को होगी।

जोधपुर जिले की शेरगढ़ तहसील के ग्राम पंचायत ख़िरजा फतेहसिंह के मूल राजस्व ग्राम ख़िरजा भोजा निवासी डूंगरसिंह सहित पांच अन्य की ओर से अधिवक्ता यशपाल ख़िलेरी व विनीता चांगल ने रिट याचिका दायर कर बताया कि राज्य सरकार द्वारा किसी भी राजस्व ग्राम में आबादी बढ़ जाने और मूलभूत सुविधाओं के सुलभ और नज़दीक उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से राजस्थान भू राजस्व अधिनियम के अन्तर्गत परिपत्र जारी कर नये ग्राम बनाये जाने के लिए निर्धारित मापदंड और नियम बना रखे हैं और उसी के अनुरूप समय की जरूरत अनुसार नए राजस्व गांव प्रस्तावित होते रहे हैं, लेकिन राजनीतिक दुर्भावनापूर्वक और राजनैतिक पार्टी के व्यक्ति विशेष को उपकृत करने के एक मात्र उद्देश्य से याचिकाकर्ताओं के मूल राजस्व ग्राम ख़िरजा भोजा में से तीन नये ग्राम प्रस्तावित कर दिए गए । जिस पर याचिकाकर्ताओं सहित सभी ग्रामवासियों ने लिखित में आपत्तियां भी पेश की लेकिन स्थानीय विधायक की विशेष अनुशंषा और दख़ल अंदाजी होने से सभी आपत्तियों को दरकिनार कर दिया गया और अपेक्षित मापदंडों को कंसीडर किये बिना ही व्यक्ति विशेष के पूर्वजों के नाम से तीन नए राजस्व गांव बनाते हुए 10 जनवरी 2025 को अधिसूचना जारी कर दी गयी, जिसे रिट याचिका दायर कर चुनौती दी गई।

> ■ **नियमानुसार नए राजस्व ग्राम का नाम किसी व्यक्ति विशेष, धर्म, जाति, और उपजाति के नाम पर किये जाने पर स्पष्ट मनाही है**

याचीगण की ओर से अधिवक्ता ख़िलेरी ने बताया कि नियमानुसार नए राजस्व ग्राम के लिए आबादी, चरागाह, सिवायचक जमीन, आबादी जमीन, आवश्यक मूलभूत सुविधाओं के विस्तार इत्यादि के तथ्यों को ध्यान में रखते हुए ही नए राजस्व गांव का सृजन किया जा सकता है, लेकिन राजस्व विभाग द्वारा ग्राम ख़िरजा भोजा से तीन नए गांव घोषित करने के लिए जारी की गई अधिसूचना राजस्थान भू राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 16 में विहित प्रक्रिया और प्रावधानों के विपरीत होकर मात्र राजनैतिक व गैरवाजिब, गैरकानूनी और असवैधानिक है।

प्रकरण के तथ्यों और मामले की परिस्थितियों का अनुशीलन कर और याची के अधिवक्ता के तर्कों से सहमत होकर राजस्थान हाइकोर्ट एकलपीठ न्यायाधीश ने शेरगढ़ तहसील के नवसृजित तीन राजस्व गांव के आदेश की क्रियान्विति पर रोक लगाते हुए राज्य सरकार को जवाब तलब किया।

राशिफल रविवार 26 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, ज्येष्ठा नक्षत्र प्रातः 8:26 तक, व्याघात योग रात्रि 3:57 तक, कौलव करण प्रातः 8:43 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 8:26 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः 8:26 से सूर्योदय तक है। आज भारतीय गणतंत्र दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 8:39 से 9:59 तक, लाभ-अमृत 9:59 से 12:39 तक, शुभ 1:59 से 3:19 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 6:00

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृष

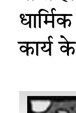

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। मित्रों/रिश्तेदारों संबंध खराब हो सकते हैं।

मिथुन

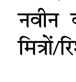

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

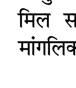

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

सिंह

आज आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कन्या

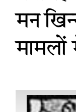

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला

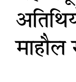

महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

वृश्चिक

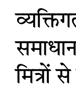

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

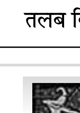

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर

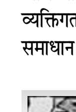

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कुंभ

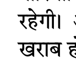

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

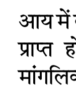

अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।